Appendix

परिशिष्ट

अनूदित रचनाएँ – महिला नाट्य लेखिकाओं ने अन्य भाषाओं की रचनाओं के अनुवाद द्वारा भी हिन्दी साहित्य को गौरवान्वित किया है । डॉ, गिरीश रस्तोगी , श्री लाल शुक्ल के उपन्यास 'राग दरबारी' का 'रंगनाथ की वापसी ' के नाम से नाट्यान्तर किया । वाणभट्ट की आत्म कथा (हजारी प्रसाद द्विवेदी) एक चिथड़ा सुख, छिन्नमस्ता का नाट्यान्तर किया जो अप्रकाशित है । कई कहानियों के भी नाट्यान्तर किये जैसे –नमक का दरोगा (प्रेमचन्द), प्रसाद की कहानियाँ, परिन्दे, खेल ।

डॉ, कुसुम कुमार ने विजय तेन्दुल्कर उपन्यास 'पापा खो गये' का नाट्यान्तर किया । डॉ, मृणाल पान्डेय ने देवकीनन्दन खत्री के उपन्यास 'काजर की कोठरी' का नाट्यान्तार किया। विजय तेन्दुलकर के नाटक 'गिद्ध' का सई परान्जपे ने , सरोजिनी वर्मा ने 'खामोश अदालत जारी है ' का, 'मैं जीता मैं हारा', 'पक्षी ऐसे आते है' शीर्षक से प्रस्तुत किया । मराठी नाटककार प्रहमाद केशव अन्ते के नाटक का अनुवाद प्रमिला गोखले ने 'मैं वह नहीं हूँ के नाम से किया है । प्रतिभा अग्रवाल ने बंगला रंगमंच के छाये हुए व्यक्तित्व 'बादल सरकार' के नाटकों का 'पगला घोड़ा, एवं इन्द्रजित, बड़ी बूआ जी, सारी रात, बल्लमपुर की रूप कथा का हिन्दी में अनुवाद किया । गिरीश घोष के नाटक 'अब्बूहसन' जिसका बादल सरकार ने संशोधन किया । इस संशोधित वृत्ति का संशोधित अनुवाद 1974 में प्रतिभा अग्रवाल ने प्रस्तुत किया । धनंजय वैरागी के नाटक 'रजनीगंधा ' तथा मधुराय के नाटक का प्रतिभा अग्रवाल ने अनुवाद किया । प्रतिभा अग्रवाल ने शिवकुमार जोशी के नाटक 'शाम उतारा' आर्थर मिलर के 'आल माई सन्स' का 'मेरे बच्चे ' नाम से, उत्पल दत्त की 'टीन की तलवार' का भी अनुवाद किया । प्रागजी डोसा के नाटक का जया भाटिया ने 'मंगल मंदिर' शीर्षक से, शांता गॉधी ने श्याम परमार के 'जस्मा ओडन' का नाटयान्तर किया । सांत्वना निगम ने देवाशीष मजूमदार के 'ताम्रपत्र' का नाट्यानुवाद किया । रघुवीर चौधरी के गुजराती नाटक 'सिकन्दर–ए–सानी' का सुशीला जोशी ने नाट्यान्तर किया ।

हिन्दी रंगमंच पर ये अनूदित नाटक लोकप्रिय भी हुए हैं, और इनमें से अधिकांश नाटक मौलिक नाटकों की तरह स्वीकृत और परिचित हो गये हैं ।